हिं च । दंसण मिह सामन्नं, तस्सावरणं तयं चउहा ॥ १० ॥

हवे पांच निद्रानुं स्वरुप कहे छे.

सुह पडिबोहा निद्दा, निद्दानिद्दाय दुक्खपडिबोहा । पयला ठिओवविठस्स पयल पयलाय चंकमओ ॥ ११ ॥

दिण चिंतिअत्थ करणी, थीणद्धी अद्धचक्कि अद्धवला । महुलित्त खग्गधारा, लिहणंव दुहाउ वेअणिअं ॥ १२ ॥

ओसन्नं सुरमणुए, सायमसायं तु तिरिअ निरएसु । मज्जंव मोहणीअं, दुविहं दंसण चरणमोहा ॥ १३ ॥

दंसणमोहं तिविहं, सम्मं मीसं तहेव मिछत्तं । सुद्धं अद्ध विसुद्धं, अविसुद्धं तं हवइ कमसो १४

हवे तत्त्वार्थ सद्दहणा ते सम्यक्त्व कहिये ते मांटे तत्त्व कहे छे.

जिअ अजिअ पुण पावा–सव संवर बंध मुक्क निज्जरणा । जेणं सद्दहइ तयं, सम्मं खइगाई बहुभेअं ॥ १५ ॥

मीसा न रागदोसो, जिणधम्मे अंतमुहु जहा अन्ने । नालिअर दीवमणुणो, मिछं जिणधम्म विवरीअं ॥ १६ ॥

हवे पचीश चारित्र मोहनीयनी प्रकृति कहे छे.

सोलस कसाय नवनो–कसाय डुविहं चरित्त मोहणियं । अण अप्पच्चक्काणा, पच्चक्काणा य संजलणा ॥ १७ ॥

हवे मुग्धजनने एनो नेद जणाववाने गाथा कहे छे.

जाजीव वरिस चउमास, पक्खगा निरय तिरिय नर अमरा । सम्माणु सव्वविरई, अहखाय चरित्त घायकरा ॥ १८ ॥

हवे पाप दृष्टांत देखाडवा पूर्वक पापाप स्वरूप नेद कहे छे.

चित्तिसमं । बायाल तिनवइविहं, तिउत्तरसयं च सत्तठी ॥ २३ ॥

हवे प्रथम बेतालीश भेद कहेवाने पिंम प्रकृति चौद कहे छे.

गइ जाइ तणु उवंगा, बंधण संघायणाणि संघयणा । संठाण वस गंध रस, फास अणुपुव्वि विहगगई ॥ २४ ॥

पिंमपयमित्ति चउदस, परघा उस्सास आयवुज्जोयं। अगुरुलहुतित्र निमिणो–वघाय मिञ्ज अठपत्तेआ ॥ २५ ॥ तस बायर पज्जत्तं, पत्तेय थिरं सुजं च सुजगं च। सुसराइज्ज जसं तस–दसगं थावर दसं तु इमं ॥ २६ ॥ थावर सुहुम अपज्जं, साहारण अथिर असुज जगाणि । कुस्सर अणाइज्जा जस, मिञ्ज नामे सेअरा वीसं ॥ २७ ॥

ए वर्णादि वीशमांहे शुज तथा अशुज केटली? ते कहे छे.

नील कसिणं दुगंधं, तित्तं कडुअं गुरुं खरं रुक्कं। सीअं च असुह नवगं, इक्कारसगं सुजं सेसं ॥ ४१ ॥

हवे आनुपूर्वीना जेद कहे छे.

चउहगइव्वणुपुव्वी, गइपुव्विदुगं तिगं निआउजुअं। पुव्वीउदउ वक्के, सुह असुह वसुट्ट विहगगइ ॥ ४२ ॥

हवे आठ प्रत्येकप्रकृतिनुं स्वरूप कहे छे.

परघा उदया पाणी, परेसिं बलिणंपि होइ दुद्धरिसो। ऊसमिण लद्धिजुत्तो, हवेइ ऊसास नामवसा ॥ ४४ ॥

हवे आताप नाम कर्मनुं स्वरूप कहे छे.

रविबिंबेउ जिअंगं. तावजुअं आयवाउ नउ जलणे। जमुसिण फासस्स तहिं. लोहियवसस्स उदउत्ति ॥ ४५ ॥

चविहं ॥ ३६ ॥ बेइअ विउव्वा हा–रयाणं सग तेअ कम्मजुत्ताणं। नव बंधणाणि इअर, डु सहिआणिं तिन्नि तेसिंच ॥ ३७ ॥

हवे संघयणना भेद कहे छे.

संघयण मट्ठिनिचउ, तं छद्धा वज्जरिसह नारायं। तहय रिसहनारायं, नारायं अद्धनारायं ॥ ३८ ॥ कीलिअ छेवठं इह, रिसहो पट्टो अ कीलिआवज्जं। उभउ मक्कडबंधो, नारायं इम-मुरालंगे ॥ ३९ ॥

हवे संस्थानना भेद कहे छे.

समचउरंसं निग्गो–ह साइ खुज्जाइ वामणं हुंमं। संठाणा वण किण्ह, नील लोहिय ह-लिद्द सिआ ॥ ४० ॥ सुरही दुरही रस पण, नित्त कडु कसाय अंबिला महुरा। फासा गुरु लहु मिउ खर, सी उण्ह सिणिद्ध रुक्खठा ॥४१॥

ए वर्णादि वीशमांहे शुन्न तथा अशुन्न केटली ? ते कहे ठे.

नील कसिणं दुगंधं, तित्तं कडुअं गुरुं खरं रुरकं । सीअं च असुह नवगं, इक्कारसगं सुन्नं सेसं ॥ ४२ ॥

हवे आनुपूर्वीना नेद कहे ठे.

चउहगइव्वणुपुव्वी, गइपुव्विदुगं तिगं नियाउजुअं । पुव्वीउदर्ठ वक्के, सुह असुह वसुट्ट विहगगइ ॥ ४३ ॥

हवे आठ प्रत्येकप्रकृतिनुं स्वरूप कहे ठे.

परघा उदया पाणी, परेसिं बलिणंपि होइ दुद्धरिसो । ऊससिण लद्धिजुत्तो, हवेइ ऊसास नामवसा ॥ ४४ ॥

हवे आतप नाम कर्मनुं स्वरूप कहे ठे.

रविबिंबेउ जिअंगं, तावजुअं आयवाउ नउ जलणे । जमुसिण फासस्स तहिं, लोहियवणस्स उदउत्ति ॥ ४५ ॥

हवे देवायुना बंध हेतु कहे छे.

अविरय माइ सुराउं, बालतवोऽकाम निज्जरो जयइ । सरलो अगार विल्लो, सुहनामं अन्नहा असुहं ॥ ५ए ॥

हवे उंचगोत्रकर्मना बंध हेतु कहे छे.

गुणपेही मय रहिउं, अज्झयणज्झावणा रुई निच्चं । पकुणइ जिणाइभत्तो, उच्चं निच्चं ई-अरहाउ ॥ ६० ॥

हवे अंतराय कर्मना बंध हेतु कहे छे.

जिणपूआ विग्घकरो, हिंसाइ परायणोऽजयइ विग्घं । इय कम्मविवागोऽयं, लिहिउं देविंद-सूरीहिं ॥ ६१ ॥

इति कर्मविपाकनामा प्रथम कर्मग्रंथ संपूर्ण.





हवे दशमा गुणठाणे शोल प्रकृतिनो अंत करे ते कहे छे.

चउ दंसणुच जस ना–ण विग्घ दसगंति सोल सुछेर्ज । तिसु साय बंध छेर्ज, सजोगि बंधंत अणं तोअ ॥ १२ ॥ बंधः सम्मत्तो ॥

हवे उदय कहे छे.

उदओ विवाग वेअण–मुदीरण मपत्ति इह दुवीस सयं । सत्तर सयं मिछे मी–स सम्म आहार जिण–णुदया ॥ १३ ॥

हवे जे प्रकृतिनो उदय मिथ्यात्वेछे पण आगल नथी ते कहे छे.

सुहुम तिगायव मिछं. मिछंतं सासणे इगारसयं । निरयाणुपुव्विणुदया. अण थावर इग विगल अंतो।१४। मीसे सय मणुपुव्वी–णुदया मीसो दएण मीसंतो । चउसय मजए सम्मा–णु पुव्वि खेवा बिअ कसाया ॥ १५ ॥

मणु तिरिणुपुव्वि विउव–ट दुहग अणाइज्जदुग

...तिग पणिंदि मणुआ-उ गइ जिणुचंति चरिम समयंतो ॥ उदउसम्मत्तो ॥ उदउव्वुदीरणया, परम पमत्ताइ सगगुणेसु ॥ २३ ॥

॥ पाठांतर गाथा ॥

जंवेअणि आहारदु-ग थीणतिग नराउ अप्पमत्तता। गुणयालसजोगिउदी-रणंतु अणुदीरगु अजोगी॥२४॥ एसा पयडी तिगुणा, वेअणि आहार जुअल थीण तिगं । मणुआउ पमत्तंता, अजोगि अणुदीरगो भ-यवं ॥ २५ ॥ उदीरणासम्मत्ता ॥

हवे चौद गुणठाणे सत्ता कहे छे.

सत्ता कम्माण ठिइ, बंधाइअ लद्ध अत्त लाभाणं । संते अडयालसयं, जा उवसमु वि जिणु विअ तइए ॥ २६ ॥

अपूवाइअ चउके. अण तिरि निरयाउ विणु विआ-लसयं । सम्माइ चउसुगत्तग, खयंमि इगचत्तसय महवा ॥ २७ ॥

खवगंतु पप्प चउसुवि. पणयालं निरय तिरि सुराउ विणा । सत्तगविणु अडतीसं, जा अनि जागो ॥ २८ ॥

, अणुपुवि विणा वा, बारस चरिम समयंमि जो-
्र । पत्तो सिद्धिं देविं–द वंदिअं नमह तं
ीरं ॥ ३५ ॥ सत्तासम्मत्ता ॥

" इति कर्मस्तवाख्यो द्वितीयः कर्मग्रंथः
संपूर्णः ॥ २ ॥



१५४ सुग नवरं, उदे मिछे इगिंदि तिग सहिआ।
...ने विअ एवं, जिणहीणो जोइ नवण वणे॥११॥
...४ सणंकुमारा-इ आणयाइ उज्जोअ चउरहिआ।
... तिरिअव नव सय, मिगिंदि पुढवि जल तरु
... ॥ १२ ॥
...२ सासणि विणु सुहु, म तेर केइ पुण बिंति
...२। तिरिअ नराउहि विणा, तणु पज्जत्तिं
जंति जउ ॥ १३ ॥
... पणिंदि तसेगइ, तसे जिणिक्कार नरतिगुच्च विणा।
... ७५ जोगे उहो, उरले नरभंगु तम्मिस्से ॥ १४ ॥
... ०। विणोहे, चउदससउ मिछि जिण पणग
...। सासणि चउ नवइ विणा, तिरिअ नराउ
... तेर ॥ १५ ॥

हवे चोथा गुणठाणे बंधस्वामित्व कहे छे.

थाण चउवीसाइ विणा, जिणपण जुअ सम्मि जो-
गिणो सायं। विणुतिरि नराउ कम्मे, वि एवमा-
हारदुगि उहो ॥ १६ ॥
सुरउहो वेउवे, तिरिअ नराउ रहिउअ तम्मिस्से ।

गुण भवसन्निसु, उंहु अजवा असन्नि सि
सणि असन्नि सन्निव, कम्मणत्तंगो अणाह
उ उस्सु सुक्काइ गुणा, चउ सग तेरत्ति बंध
देवंदसूरि रइयं, नेयं कम्मत्थयं सोउं ॥ २५

ति बंधस्वामित्वाख्यस्तृतीयः कर्मग्रंथ



षम्डशीतिकाख्य चतुर्थ कर्मग्रंथः प्रारभ्यते ॥

नमिअ जिणं जिअ मग्गण, गुणठाणुवर्उग जोग
ं ॥ बंध प्पबहू जावे, संखिज्जाइ किमवि
॥ १ ॥

मिअ जिणं वत्तवा, चउदस जिअगणएसु गुण-
। जोगुवर्उगो लेसा, बंधोदर्उ दीरणा सत्ता
२ ॥ पाठांतरं॥

... जिअठाणेसु, चउदस गुणठाणगाणि जोगाय
उवर्उग लेस बंधो, दर्उदीरण संत अठपए ॥ २ ॥
मूल चउद मग्गण, ठाणेसु बासठि उत्तरेसु च ।
गुण जोगु वर्उगा, लेस प्पबहुं च ठठाणा
३ ॥ पाठांतरं ॥

...स मग्गणठाणे–सु मूलपएसु बिसठि इअरेसु ।
गुण जोगुवर्उगा. लेसप्पबहुत्त ठ ठाणा ॥ ३ ॥
चउदस गुणेसु जिअजो–गु वर्उग लेसाय बंधहे-
उप । बंधाइअ चउ अप्पा–बहुं च तो जाव सं-
ग्वाइ ॥ ४ ॥ पाठांतरं ॥
चउदस गुणठाणेसु, जिअ जोगुवर्उग लेस्स बंधाय ।

…ग बंधा, संतु दया सत्त अठ चत्तारि ॥ सत्तठ पंचदुगं, उदीरणा सन्निपज्जत्ते ॥ ११ ॥

… इंदिएअ काए, जोए वेए कसाय नाणेसु ॥ … दंसण लेसा, भव सम्मे सन्नि आहारे ॥१२॥

… नर तिरि निरय गइ, इग विअ तिअ चउ … दि छक्काया ॥ भू जल जलणा ऽनिल वण, तसाय … वयण तणु जोगा ॥ १३ ॥

… नरि त्रि नपुंसग, कसाय कोह मय माय लो- … ॥ मइ सुअ ऽवहि मण केवल, विभंग मइ … नाण सागारा ॥ १४ ॥

… छेअ परिहा–र सुहुम अहखाय देस जय … ॥ चक्खु अचक्खु ऊहो, केवल दंसण अणा- … ॥ १५ ॥

किण्हा नीला काऊ. तेऊ पम्हाय सुक्क भविअरा ॥ वेअग खइगुवसममिच्छ मीस सासाण सन्निअरे॥१६॥

आहारे अर भेया. सुर निरय विभंग मइ सु ऊहि दुगे ॥ सम्मत्त तिगे पम्हा. सुक्का सन्नीसु सन्निदुगं ॥ १७ ॥

णनाणि सग जयाई, समइय छेअ चउ दुन्नि परि-
रे ॥ केवल दुगि दोचरिमा, जयाइ नव मइसु
दि दुगे ॥ २४ ॥
ड उवसमि चउ वेअगि, खइए इक्कार मिछ तिगि
से ॥ सुहुमे स्सठाण तेर–स जोग आहार सुक्काए
२५ ॥
सन्निसु पढम दुगं, पढम तिलेसासु छच्च दुसु सत्त
पढमंतिम डुग अजया, अणहारे मग्गणासु गुणा
२६ ॥

॥ अथ मार्गणासु योगानाह ॥

यथर मीस अस–च मोस मण वय विउवि आ-
ा ॥ उरलं मीसा कम्मण, इअजोगा कम्म अण-
॥ २७ ॥
गइ पणिंदि तस तणु, अचक्खु नर नपु कसाय
मडुगे ॥ सन्नि छलेसा हारग, जव मइ सुअ
हि डुगि सवे ॥ २८ ॥
रे इत्थि अजय सामण. अनाण उवसम अजव
सु ॥ तेराहार डुगूणा, ते उरलडुगूण सुर निरए
९ ॥

केवल डुगं निय्यडुगं, नव ति अनाणविणु खइअ
अहखाए । दंसण नाण तिगंदे–सि मीसि अन्नाण
मीसंतं ॥ ३६ ॥

मणनाण चक्खु वज्जा, अणहारे तिन्नि दंस चउ
नाण । चउ नाण संजमोवस,–म वेअगे उहि–
दंसेअ ॥ ३७ ॥

दो तेर तेर बारस, मणे कमा अठ दु चउ चउ
वयणे । चउ दु पण तिन्नि काए, जिअगुण जोगो-
वउगन्ने ॥ ३८ ॥

ठसु ... एगिंदि असन्नि भूदग वणेसु ।
पढमा ... ञिउ, विगलग्गि पवणेसु ३९

... सुक्का ठावि सेस
... आ, थोवा डु असं-
... ॥

... न अहिआ
... जलानिल

... ॥ अणंत·

केवल डुगं निश्रडुगं, नव ति अनाणविणु खइअ अहखाए । दंसण नाण तिगंदे–सि मीसि अन्नाण मीसंतं ॥ ३६ ॥

मणनाण चक्कु वज्जा, अणहारे तिन्नि दंस चउ नाण । चउ नाण संजमोवस,–म वेअगे उहि–दंसेअ ॥ ३७ ॥

दो तेर तेर बारस, मणे कमा अठ दु चउ चउ वयणे । चउ दु पण तिन्नि काए, जिअगुण जोगो-वउगन्ने ॥ ३८ ॥

उसु लेसासु सगाणं, एगिंदि असन्नि जूदग वणेसु । पढमा चउरो तिन्निउ, नारय विगलग्गि पवणेसु ३९ अहखाय सुहुम केवल, डुगि सुक्का बवि सेस गाणेसु । नर निरय देव तिरिआ, थोवा डु असं-खणंत गुणा ॥ ४० ॥

पण चउ ति डु एगिंदी. थोवा तिन्नि अहिआ अणंत गुणा । तस थोव असंखग्गी, जू जलानिल अहिअ अणंता ॥ ४१ ॥

मण वयण काय जोगी, थोवा असंखगुणा अणंत-

कम्मुरलडुगं थावरि, ते सविउव्वि दुग पंच इग पवणे ॥ छ असन्नि चरिम वयजुअ, ते विउव्वि डुगूण चउ विगले ॥ ३० ॥

कम्मुरलमीस विणु मण, वय समइअ छेअ चक्खु मणनाणे ॥ उरल डुग कम्म पढमं–तिम मण वय केवल दुगंमि ॥ ३१ ॥

मण वय उरला परिहा–र सुहुमि नव तेउ मीसि सविउव्वा । देसे सविउव्विडुगा, सकम्मुरल मीस अहखाए ॥ ३२ ॥

ति अनाण नाण पण चउ, दंसण बार जिअलक्खणुवओगा । विणु मण नाण दु केवल, नव सुर तिरि निरय अजएसु ॥ ३३ ॥

तस जोअ वेअसुक्का–हार नर पणिंदि सन्नि भवि सव्वे । नयणेअर पण लेसा, कसाय दस केवल दुगूणा ॥ ३४ ॥

... . असनि डुअ ना–ण दुदंस इग वि ति ...रि अचक्खु । ति अनाण दंसण दुगं, अनाण ... । अनाणमिस्र दुगे ॥ ३५ ॥

केवल डुगं निअडुगं, नव ति अन
अहखाए । दंसण नाण तिगंदे–सि
मीसंतं ॥ ३६ ॥

मणनाण चक्खु वज्जा, अणहारे
नाण । चउ नाण संजमोवस,–म
दंसेअ ॥ ३७ ॥

दो तेर तेर बारस, मणे कमा अ
वयणे । चउ दु पण तिन्नि काए,
वउगन्ने ॥ ३८ ॥

छसु लेसासु सठाणं, एगिंदि असन्नि
पढमा चउरो तिन्निउ, नारय विगल
अहखाय सुहुम केवल, डुगि मु
ठाणेसु । नर निरय देव तिरिआ,
खणंत गुणा ॥ ४० ॥

पण चउ ति डु एगिंदी, थोवा
अणंत गुणा । तस थोव असंखग्गी
अहिआ अणंता ॥ ४१ ॥



उवसंता । संख गुण खीण सुहुमा, निअट्टि अपुव्व सम अहिआ ॥ ६५ ॥

जोगि अपमत्त इयरे, संखगुणा देस सासणा मीसा । अविरइ अजोगि मिछा, असंख चउरो दुवेणंता ॥ ६६ ॥

उवसम खय मीसोदय, परिणामा छु नव गार इग· वीसा तिअ भेअ सन्नि वाइअ सम्मं चरणं पढम जावे ॥ ६७ ॥

बीए केवल जुअलं, सम्मं दाणाइ लद्धि पण चरणं तइए सेसुवउंगा, पण लद्धी सम्म विरइ छुगं ॥ ६८ ॥

अन्नाण मसिद्धत्ता, ऽसंजम लेसा कसाय गइ वेआ॥ मिछे तुरिए जव्वा, ऽजवत्त जिअत्त परिणामे॥६९ ॥ चउ चउ गईसु मीसग, परिणामुदएहिं चउसु ख· इएहिं ॥ उवसम जुएहिं वा चउ, केवलि परिणामु· दय खइए ॥ ७० ॥

खय परिणामे सिद्धा, नराण पण जोगुवसम सेढी·

ए ॥ इअ पनर सन्निवाइअ, नेआ वीसं असंजवि· णो ॥ ३१ ॥

मोहो वसमो मीसो, चउ घाइसु अठ कम्मसु अ· सेसा ॥ धम्माइ पारिणामिअ, नावे खंधा उदइ एवि ॥ ३२ ॥

सम्माइ चउसु तिग चउ, नावा चउ पणु वसामगुवसंते ॥ चउखीणाऽ पुवे ति, न्निसेस गुण ठाणगेग जिए ॥ ३३ ॥

संखिज्जेग मसंखं, परित्त जुत्त निअ पय जुअं ति· विहं ॥ एव मणंतंपि तिहा, जहन्न मज्जुक्कसा सवे ॥ ३४ ॥

लहु संखिज्जं डुचिअ, अउपरं मज्झिमंतु जा गुरुअं ॥ जंबूदीव पमाणय, चउपल्ल परुवणाइ इमं ॥ ३५ ॥ पल्लाण वठिअ सिला–ग पडिसिलागा महा सिलागरका ॥ जोयण सहसो गाढा, सवेइ अंता ससिह नरिआ ॥ ३६ ॥

तो दीवु दहिसु इक्कि, क्क सरिसवं खिविअ निठिए

ठिइबंधज्झवसाया, अणुजागा जोग छेअ पलिजागा ॥
डुएहय समाण समया, पत्तेअ निगोअए खिवसु॥७५॥
पुण तंमि तिवग्गिअए, परित्तणंत लहु तस्स रासीणं
॥ अज्ञासे लहुजुत्ता, अणंतं अज्ञव जिअमाणं ॥७६॥
तव्वग्गे पुण जायइ, णंताणंत लहु तंच तिरकुत्तो ॥
वग्गसु तहवि न तं हो, इ णंत खेवे खिवसु छ इमे
॥ ७७ ॥
सिद्धा निगोअजीवा, वणस्सई काल पुग्गला चेव ॥
सव्व मलोग नहं पुण, तिवग्गिउं केवल डुगंमि ॥७८॥
खित्ते णंताणंतं, हवेइ जिछंतु ववहरइ मज्झं ॥ इय
सुहमछ विआरो, लिहिउं देविंद सूरीहिं ॥ ७९ ॥

॥ इति षमशीतिकाख्य चतुर्थकर्मग्रंथः
समाप्तः ॥



जंग तिगं । मिच्छम्मि तिन्निजंगा, दुहावि अधुवा तुरिय जंगा ॥ ५ ॥

हवे सत्तावीश ध्रुवोदयी प्रकृति कहेछे.

निमिण थिर अथिर अगुरुअ, सुह असुहं तेय कम्म चउवन्ना । नाणंतराय दंसण, मिछं धुव उदय सगवीसा ॥ ६ ॥

हवे एनी विपरीत अध्रुवोदयी प्रकृति कहेछे.

थिर सुन्न अर विणु अद्धुव, बंधीमिच्छ विणु मोह धुवबंधी । निद्दोवघाय मीसं, सम्मं पण नवइ अधुवुदया ॥ ७ ॥

हवे ध्रुवसत्ता प्रकृति कहेछे.

तस वणवीस सग ते–अ कम्म धुवबंधि सेस वेय तिगं। आगिइ तिग वेअणिअं, दुजुअल सग उरल सास चऊ ॥ ८ ॥

खगइ तिरिदुग नीअं, धुवसत्ता (॥ अथा ध्रुवसत्ता निरूप्यंते ॥) सम्म मीसमणुअदुगं ॥ विउविकार जिणाउं, हारस गुच्चा अधुवसत्ता ॥ ९ ॥

हवे गुणगणानी अपेक्षाये प्रकृतिनी सत्तानुं ध्रुवाध्रुवपणुं विचारे छे.

पढम तिगुणेसु मिछं, निअमा अजयाइ अ-
ठगे भज्जं । सासाणे खलु सम्मं, सत्तं मिछाइ
दसगेवा ॥ १० ॥

सासण मीसेसु धुवं, मीसं मिछाइ नवसु भय-
णाए । आइ डुग अण नियमा, भइआ मी-
साइ नव गम्मि ॥ ११ ॥

हवे आहारक सप्तकनी सत्ता कहे छे.

आहार सत्तगं वा, सव्व गुणे वि ति गुणे
विणा तिछं । नो भय संते मिछो, अंतमुहुत्तं
भवे तिछे ॥ १२ ॥

॥ अथ सर्व तथा देश घातिन्यः प्रकृतयः ॥

केवल जुअलावरणा, पण निद्दा बारसाइम
कसाया । मिछंति सव्व घाई, चउ नाण ति
दंसणावरणा ॥ १३ ॥

हवे अपरावर्त्तमान प्रकृतिउं कहे ले.

नाम धुववंधि नवगं, दंसण पण नाण विग्घ परघायं । जय कुछ मिछ सासं, जिणगुण तीसा अपरियत्ता ॥ १८ ॥

हवे परावर्त्तमान प्रकृतिउं कहे ले.

तणु अठ वेअ डुजुअल, कसाय उद्योअ गोयडुग निद्दा । तस वीसाउ परित्ता, खित्त-विवागाऽणुपुवीउं ॥ १९ ॥

हवे जीवविपाकी प्रकृति कहे ले.

घण घाइ डुगोअ जिणा, तसिअर तिग सुजग डुजगचउ सासं । जाइ तिग जिअ-विवागा, आऊ चउरो जवविवागा ॥ २० ॥

हवे पुद्गलविपाकी प्रकृति कहे ले.

नाम धुवोदय चउ तणु–वघाय साहारणिय जोअतिगं । पुग्गलविवागि बंधो, पयइ ठिइ रस पएसत्ति ॥ २१ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

हवे मूल प्रकृति तथा उत्तर प्रकृतिनो स्थितिबंध स्वामित्व द्वारे करी सविस्तर पणे कहे छे.

तीसयर कोमि कोमी, नामे गोएय सत्तरी मोहे। तीसयर चउसु उदही, निरय सुराउं-मि तित्तीसा ॥ २६ ॥

हवे मूल प्रकृतिनो जघन्य स्थितिबंध कहे छे.

मुत्तूअ कसाय ठिइ, बार मुहुत्ता जहन्न वेय-णिए। अठ ठ नाम गोए–सु सेसएसु मुहुत्तं तो ॥ २७ ॥

विग्घा वरण असाए, तीसं अठार सुहुम विगल तिगे। पढमा गिइ संघयणे, दस ङसु चरिमेसु ङग वुड्ढी ॥ २८ ॥

चालीस कसाएसु. मिउ लहु निद्धुण्ह सुरहि सिय महुरे। दस दोसड्ड समहिया. तेहालिद्दं बिलाईणं ॥ २९ ॥

दस सुह विहगइ उच्चे. सुरङग थिरछक्क पुरिम

मूल पयमीण अम स-त्त ठेग वंधेसु तिन्नि भूगारा । अप्पत्तरा तिअ चउरो, अवठिआ नहु अवत्तवो ॥ ७९ ॥

हवे भूयस्कारादिक वंधनां लक्षण कहे ठे.

एगादहिगे भूर्ज, एगाई ऊण गम्मि अप्पतरो । तम्मत्तो अवठियर्ज, पढमे समए अवत्तव्वो ॥ ७३ ॥

ए रीते उत्तर प्रकृतिना वंध सामान्ये कह्या हवे विशेषे कहे ठे.

नव ठ चक्रदंसे डड, ति ड मोहे ड इगवीसं सत्तरस । तेरस नव पण चउ तिड, इक्को नव अठ दस डन्नि ॥ ७४ ॥

हवे नामकर्मने विषे भूयस्कारादिक कहेवाने अर्थे प्रथम वंधस्थानक कहे ठे.

ति पण ठ अठ नवहिया, वीमा तीसे गतीस इग नामे । ठम्मग अठ तिवंधो. सेसेमु ठाण मिक्किकं ॥ ७५ ॥

हवे मूल प्रकृति तथा उत्तर प्रकृतिनो स्थितिबंध स्वामित्व द्वारे करी सविस्तर पणे कहे छे.

वीसयर कोमि कोमी, नामे गोएय सत्तरी मोहे । तीसयर चउसु उदही, निरय सुराउं-मि तित्तीसा ॥ २६ ॥

हवे मूल प्रकृतिनो जघन्य स्थितिबंध कहे छे.

मुत्तूत्र्ं कसाय छिइ, वार मुहुत्ता जहन्न वेय-णिए । अठ ठ नाम गोए–सु सेसएसु मुहुत्तं तो ॥ २७ ॥

विग्घा वरण असाए, तीसं अठार सुहुम विगल तिगे । पढमा गिइ संघयणे, दस डुसु चरिमेसु डुग वुड्ढी ॥ २८ ॥

चालीस कसाएसु, मिउ लहु निद्धुण्ह सुरहि सिय महुरे । दस दोसड्ढ समहिया, ते हालिद्दं बिलाईणं ॥ २९ ॥

दस सुह विहगइ उच्चे, सुरडुग थिरछक्क पुरिस

मूल पयमीए अम स–त्त ठेग वंधेसु तिन्नि भूगारा । अप्पत्तरा तिअ चउरो, अवठिआ नहु अवत्तवो ॥ ७२ ॥

हवे भूयस्कारादिक बंधनां लक्षण कहे छे.

एगादहिगे भूउं, एगाई ऊण गम्मि अप्पतरो । तम्मत्तो अवठियउं, पढमे समए अवत्तव्वो ॥ ७३ ॥

ए रीते उत्तर प्रकृतिना बंध सामान्ये कह्या

हवे विशेषे कहे छे.

नव छ चऊदंसे दुडु, ति दु मोहे दु इगवीस सत्तरस । तेरस नव पण चउ तिदु, इक्को नव अठ दस दुन्नि ॥ ७४ ॥

हवे नामकर्मने विषे भूयस्कारादिक कहेवाने अर्थे प्रथम बंधस्थानक कहे छे

ति पण छ अठ नवहिया, वीसा तीसे गतीस इग नामे । छस्सग अठ तिबंधा, सेसेसु ठाणमिक्किक्कं ॥ ७५ ॥

हवे मूल प्रकृति तथा उत्तर प्रकृतिनो स्थितिबंध
स्वामित्व द्वारे करी सविस्तर पणे कहे छे.

वीसयर कोमि कोमी, नामे गोएय सत्तरी मोहे । तीसयर चउसु उदही, निरय सुराउंमि तित्तीसा ॥ २६ ॥

हवे मूल प्रकृतिनो जघन्य स्थितिबंध कहे छे.

मुत्तूअ कसाय ठिइ, बार मुहुत्ता जहन्न वेयणिए । अठ ठ नाम गोए–सु सेसएसु मुहुत्तं तो ॥ २७ ॥

विग्घा वरण असाए, तीसं अठार सुहुम विगल तिगे । पढमा गिइ संघयणे, दस छुसु चरिमेसु छुग वुड्ढी ॥ २८ ॥

चालीस कसाएसु, मिउ लहु निद्धुण्ह सुरहि सिय महुरे । दस दोसड्ढ समहिया, तेहालिद्दं बिलाईणं ॥ २९ ॥

दस सुह विहगइ उच्चे, सुरडुग थिरछक्क पुरिस

हवे उत्तर प्रकृतिनो जघन्य स्थितिबंध कहे छे
लहु ठिइ बंधो संजलण, लोह पण वि
नाण दंसेसु । भिन्न मुहुत्तं ते अठ, जसु
बारसय साए ॥ ३५ ॥
दो इग मासो पक्खो, संजलण तिगे पुम
वरिसाणि । सेसाणु क्कोसाउ, मिच्छत्त ठिइ
जलद्धं ॥ ३६ ॥
अय मुक्कोसो गिंदिसु, पलियाऽसंखंस ही
लहु बंधो ॥ कमसो पणवीसाए, पन्ना स
सहस संगुणिउ ॥ ३७ ॥

हवे विकलेंद्रिय तथा असन्नीआ पंचेंद्रियनो
जघन्य स्थितिबंध कहे छे.

विगल असन्निसु जिठो, कणिठउ पल्लऽसं
जागुणो । सुर निरयाउ समादस, सहस
सेसाउ खुड्ड भवं ॥ ३८ ॥

एम गुणस्थानके स्वामित्व कहीने हवे जीव
नेदे कहे डे.

विगल सुहुमाउग तिगं, तिरिमणुया
विउवि निरयडगं । एगिंदि थावरा यव, अ
साणा सुरुक्कोसं ॥ ४३ ॥
तिरि उरल दुगुज्जोअं, बिवठ्ठ सुर निरय से
चउगइआ ॥ अथ जघन्य स्थितिबंध स्वा
नाह ॥ आहार जिणमपुवो, नियट्टि संजल
पुरिस लहू ॥ ४४ ॥
साय जसुच्चा वरणा, विग्घं सुहुमो विउवि
असन्नि । सन्नीवि आउ बायर, पज्जे गिंदि
सेसाणं ॥ ४५ ॥

०.हवे उत्कृष्टादि स्थितिबंधने विषेज चार नां
स्थितिबंधना कहे डे.

उक्कोस जहण्णीयर, नंगामाइ अणाइ ध्रु
अधुवा । चउहा सग अजहन्ना. सेस नि
आउ चउसु दुहा ॥ ४६ ॥

तो जइ जिठो बंधो, संखगुणो देस विरय हस्सिअरो। सम्म चउ सन्नि चउरो, ठिइ बंधाणु कम संखगुणा ॥ ५२ ॥
सव्वाणवि जिठ ठिइ, असुहा जं साइ संकिलेसेणं। इअरा विसोहिओ पुण, मुत्तुं नर अमर तिरि आउ ॥ ५३ ॥

हवे योगस्थानकना स्वामी कहे छे.

सुहुम निगोआइ खण, प्पजोग बायरय विगल अमण मणा। अपज्ज लहु पढम दु गुरु, पजहस्सिअरो असंख गुणो ॥ ५३ ॥
असमत्त तमुक्कोसो, पज्ज जहन्निअर एव ठिइ ठाणा। अपजेयर संखगुणा, परमऽ पज बिए असंख गुणा ॥ ५४ ॥

हवे जेटला अपर्याप्तावस्थाये योग वृद्धि होय ते कहे छे.

पइखिण ममंखगुण विरि–य अपज्ज ठिइ

हवे जघन्य रसबंधना स्वामी कहे वे.

थीण तिगं अण मिवं, मंद रसं संजमुम्मुहो मिछो । विय तिय कसाय अविरय, देस पमत्तो अरइ सोए ॥ ६ए ॥

अपमाइ हारग दुगं, दुनिद्द असुवन्न हास रइ कुछा । जयमुवघाय मपुव्वो, अनियट्टी पुरिस संजलणे ॥ ७० ॥

विग्घा वरणे सुहुमो, मणुतिरिआ सुहुम विगल तिगआउ । वेउव्वि छक्क ममरा, निरया उज्जोय उरल दुगं ॥ ७१ ॥

तिरि दुग निअं तमतमा, जिण मविरय निरय विणिग थावरयं । आसुहु मायव सम्मो–व साय थिर सुह जसा सियरा ॥ ७२ ॥

तस वन्न तेअ चउ मणु, खगइ दुग पणिंदि सास परघुच्चं ।संघयणा गिइ नपु थी, सुजगि अरति मिह चउ गइआ ॥ ७३ ॥



सुहुमो। होइ अणंतुस्सप्पिणि, परिमाणो पुग्गल परट्टो ॥ ८६ ॥

हवे प्रथम द्रव्यथी बादर तथा सूक्ष्म पुद्‌गल परावर्त्तनुं स्वरूप कहे छे.

उरलाइ सत्त गेणं, एग जिउ मुअइ फुसिय सव अणू। जित्तिअ कालि स थूलो, दवे सुहुमो सगऽन्नयरा ॥ ८७ ॥

हवे बादर तथा सूक्ष्म क्षेत्रादिक त्रण पुद्‌गल परावर्त्तनुं स्वरूप कहे छे.

लोग पएसो सप्पिणि, समया अणुभाग बंध ठाणाय । जह तह कम मरणेणं, पुठा खित्ताइ थूलियरा ॥ ८८ ॥

॥ अथोत्कृष्ट जघन्य प्रदेश बंध स्वरूप माह. ॥

अप्पयर पयडि बंधी, उक्कट्ठ जोगीअ सन्नि पज्जत्तो । कुणइ पए सुकोसं, जहन्नयं तस्स वच्चासे ॥ ८९ ॥

नाणत्तं । मृत्त उगोऽणुकोसो, चउद कुदा सबत्तं ॥ ए४ ॥

हवे योग स्थानकनी संख्या कहे ले,

असंखिजंसे, जोगठाणाणि पयडि ठिइ । ठिइ बंधअवसाया, अणुनाग ठाण वगुणा ॥ एए ॥

कम्म पएसा, अनंत गुणिया तउ सरवेया पयडि पएसं, ठिइ अणुनाग यार्ड ॥ ए६ ॥

स रज्जू लोगो, वुन्धिकर्ड सत्त रज्जु माण । तद्दीहेग पएसा, सेढी पयरो अ गो ॥ ए७ ॥

वे उपशम श्रेणीनुं स्वरूप अनुक्रमे कहे ले.

दंम नपुंसि ह्थी, वेअ ठकं च पुरिस च ॥ दोदो एगं तिरिए, सरिसे सरिसं मिइ ॥ एट ॥

ेग्ग नाणत्तं । मूल ठगेऽणुमोसो, चउद उद्दा
सि सबत्तं ॥ एध ॥

हवे योग स्थानकनी संख्या कहे छे,

दि असंखिज्जंसे, जोगठाणाणि पयडि ठिइ
ेआ । ठिइ बंधज्झवसाया, अणुजाग ठाण
असंखगुणा ॥ एए ॥

त्तो कम्म पएसा, अनंत गुणिया तउ सरऐया
जोगा पयडि पएसं, ठिइ अणुज्ञाग
कसायाउ ॥ एद ॥

चउदस रज्जू लोगो, बुद्धिकउ सत्त रज्जु माण
घणो । तद्दीहेग पएसा, सेढी पयरो अ
तव्वग्गो ॥ एउ ॥

हवे उपशम श्रेणीनुं स्वरूप अनुक्रमे कहे छे.

अण दंस नपुंसि त्थी, वेअ छक्कं [illegible]रिस
वेअं च ॥ दोदो एगं तिरिए [illegible]
उवसमेइ [illegible] ए ॥

ॐ परमगुरुभ्यः नमः

॥ श्री चंद्रमहत्तराचार्य प्रणीत सप्ततिका नामा षष्टः कर्मग्रंथः समारभ्यते ॥

सिद्ध पएहिं महछं, बंधोदय संत पयडि गणाणं । वुछं सुण संखेवं, नीसंदं दिठि वायस्स ॥ १ ॥

कइ बंधंतो वेअइ, कइ कइ वा संत पयडि ठाणाणि । मूलुत्तर पगईसु, भंग विगप्पा मुणेअव्वा ॥ २ ॥

हवे मूल आठ कर्मनो बंध उदय सत्ता स्थानकनो परस्पर संवेध कहे छे.

अठ विह सत्त छव्वं,-धएसु अठेव उदय संतंसा । एग विहे ति विगप्पा. एग विगप्पा अबंधंमि ॥ ३ ॥

हवे ए सातभंग चौद जीवस्थानके कही देखाडे छे.

सत्तठ बंध अठुद-यसंत तेरस सुजीव ठा-

ॐ परमगुरुभ्यः नमः

॥ श्री चंडमहत्तराचार्य प्रणीत सप्ततिका नामा षष्ठः कर्मग्रंथः समारभ्यते ॥

सिद्ध पएहिं महत्थं, बंधोदय संत पयडि ठाणाणं । वुच्छं सुण संखेवं, नीसंदं दिठि वायस्स ॥ १ ॥

कइ बंधंतो वेअइ, कइ कइ वा संत पयडि ठाणाणि । मूलुत्तर पगईसु, भंग विगप्पा मुणेअवा ॥ २ ॥

हवे मूल आठ कर्मनो बंध उदय सत्ता स्थानकनो परस्पर संवेध कहे छे.

अठ विह सत्त छव्वं,–धएसु अठेव उदय संतंसा । एग विहे ति विगप्पा, एग विगप्पा अबंधंमि ॥ ३ ॥

हवे ए सातभंग चौद जीवस्थानके कही देखाडे छे.

सत्तठ बंध अठुद–यसंत तेरस सुजीव ठा-

ठाइं । उदय ठाणाइ दुवे, चउ पणग दंस-
णावरणे ॥ ८ ॥

हवे ए दर्शनावरणीयना बंध स्थानकादिकनो
संवेध गुणठाणे कहे छे.

बीयावरणे नव बं-धएसु चउ पंच उदय नव
संता । छच्चउ बंधे चेवं, चउ बंधुदए छ
लंसाय ॥ ९ ॥
उवरय बंधे चउपण, नवंस चउरुदय छच्च-
उसंता । वेयणियाउ य गोए, विभज्ज मोहं
परं वुच्छं ॥ १० ॥

हवे ए त्रण कर्मना भांगा गाथाए करी कहे छे.

गोअम्मि सत्त भंगा, अठ्य भंगा हवंति
वेयणिए । पण नव नव पण भंगा, आउ
चउक्कवि कमसोउ ॥ ११ ॥

हवे मोहनीय कर्मना बंधादिक स्थानक कहे छे.

बावीस इक्कवीसा, सत्तरस तेरसे व नव पंच ।

ठाइं । उदय ठाणाइ दुवे, चउ पणग दंस-
णावरणे ॥ ८ ॥

हवे ए दर्शनावरणीयना बंध स्थानकादिकनो
संवेध गुणठाणे कहे छे.

बीयावरणे नव बं–धएसु चउ पंच उदय नव
संता । ठच्चउ बंधे चेवं, चउ बंधुदए ठ
लंसाय ॥ ए ॥

उवरय बंधे चउपण, नवंस चउरुदय ठच्च-
उसंता । वेयणियाउ गोए, विज्जज मोहं
परं वुठं ॥ १० ॥

हवे ए त्रण कर्मना जांगा गाथाए करी कहे छे.
गोअम्मि सत्त जंगा, अठय जंगा हवंति
वेयणिए । पण नव नव पण जंगा, आउ
चउक्केवि कमसोउ ॥ ११ ॥

हवे मोहनीय कर्मना बंध[illegible] स्थानक कहे छे.
बावीस इक्कवीसा, [illegible] से य नव [illegible]

चउ तिग छगचं इक्कं, बंध ठाणाणि मोहस्स ॥ १२ ॥

हवे मोहनीय कर्मनां नव उदय स्थानक कहे छे.

एगं च दोव चउरो, एत्तो एगाहिआ दसु-क्कोसा । ओहेण मोहणिज्जे, उदए ठाणाणि नव हुंति ॥ १३ ॥

हवे मोहनीय कर्मना पंदर सत्तानां स्थानक कहे छे.

अठय सत्तय छ च्चउ, तिग छग एगाहिआ नवे वीसा । तेरस बारिक्कारस, इत्तो पंचाइ एगूणा ॥ १४ ॥

संतस्स पयडिठाणा-णि ताणि मोहस्स हुंति [illegible] । बंधोदय संते पुण, भंग विगप्पे [illegible] ॥ १५ ॥

[illegible] चउ इग, वीसे सत्तरस तेरसे [illegible] वि छणिउं, इक्किक अठ

हवे एज बंधस्थानकमां कयां कयां बंधस्थानके केटलां केटलां उदय स्थानक होय ते कहे छे.

दस बावीसे नव इग, वीसे सत्ताइ उदय कम्मंसा । गइअ नव सत्तरसे, तेरं पंचाइ अछेव ॥ १७ ॥

हवे नव प्रकृतिने बंधे भांगा कहे छे.

चत्तारि आइ नव बं–धएसु उक्कोस सत्त मुदयंसा । पंच विह बंधगे पुण, उदउ डुएहं मुणेअवो ॥ १८ ॥

हवे आगल बंध स्थानकें उदय स्थानक कहे छे.

इत्तो चउ बंधाइ, इक्किकुदया हवंति सधेवि । बंधो चरमेवि तहा, उदया भावे विवा हुजा ॥ १९ ॥

हवे दशादिक पश्चानुपूर्वीए एक पर्यंत उदय स्थानकने विषे जेटला भांगा होय ते कहे छे.

इक्कग छक्किक्कारस, दस सत्त चउक्क इक्कगंचेव

ठाणाणि । जणिआणि मोह णिज्जे, इत्तो नामं परं वुछं ॥ २५ ॥

हवे प्रथम नामकर्मनां बंधस्थान कहे छे.

तेवीस पन्नवीसा, छवीसा अठवीस गुणतीसा । तीसेगतीस मेगं, बंधठाणाणि नामस्स॥ २६॥

हवे कया बंध स्थानके केटला जांगा सर्व संख्याये होय ते कहे छे.

चउ पणवीसा सोलस, नव बाण उई सयाय अडयाला । एयालुत्तर छाया–लसया इक्किक्कि बंध विही ॥ ॥ २७ ॥

हवे नामकर्मनां बार उदय स्थानक कहे छे.

वीसिगवीसा चउवी,–स गाउ एगाहि याय इगतीसा । उदयठाणाणि जवे, नव अठय हुंति नामस्स ॥ २८ ॥

हवे कया उदय स्थानके केटला जांगा सरवाले होय ते कहे छे.

इक्क बयालि क्कारस, तित्तीसा छस्सयाणि

ठाणाणि । नवित्र्याणि मोह णिज्जे, इत्तो नामं परं वुच्छं ॥ २५ ॥

हवे प्रथम नामकर्मनां बंधस्थान कहे छे.

तेवीस पन्नवीसा, छवीसा अठवीस गुणतीसा । तीसेगतीस मेगं, बंधठाणाणि नामस्स॥ २६॥

हवे कया बंध स्थानके केटला भांगा सर्व संख्याये होय ते कहे छे.

चउ पणवीसा सोलस, नव बाण उई सयाय अडयाला । एयालुत्तर छाया–लसया इक्किक्कि बंध विही ॥ ॥ २७ ॥

हवे नामकर्मनां बार उदय स्थानक कहे छे.

वीसिगवीसा चउवी,–स गाउ एगाहि याय इगतीसा । उदयठाणाणि नवे, नव अठय हुंति नामस्स ॥ २८ ॥

हवे कया उदय स्थानके केटला भांगा सरवाले होय ते कहे छे.

इक्क बयालि क्कारस, तित्तीसा छस्सयाणि

अठ चउरछवीसे, नव सत्ति गुण तीस
तीसम्मि ॥ ३३ ॥
एगेग मेगतीसे, एगे एगुदय अठ संतंमि ।
उवरय बंधो दस दस, वेयग संतंमि
ठाणाणि ॥ ३४ ॥
तिविगप्प पगइ ठाणे–हिं जीव गुणसन्निएसु
ठाणेसु । भंगा पउंजियवा, जठ जहा संभवो
भवइ ॥ ३५ ॥

हवे चौद जीव स्थानक आश्रयीने ज्ञानावरणीय
तथा अंतराय कर्मना भांगा कहे छे.

तेरससु जीव संखे–वएसु नाणंतराय ति-
विगप्पो । इक्कंमि ति ड विगप्पो, करणं पइ
इठ अविगप्पो ॥ ३६ ॥

हवे दर्शनावरणीयना बंधोदय सत्ता स्थानकना
भांगा चौद जीव स्थानकने विषे विचारे छे.

तेरे नव चउ पणगं, नव सत्ते गम्मि भंग

अठ चउरछवीसे, नव सत्ति गुण तीस तीसम्मि ॥ ३३ ॥

एगेग मेगतीसे, एगे एगुदय अठ संतंमि । उवरय बंधो दस दस, वेयग संतंमि ठाणाणि ॥ ३४ ॥

तिविगप्प पगइ ठाणे-हिं जीव गुणसन्निएसु ठाणेसु । भंगा पउंजियव्वा, जच्छ जहा संभवो भवइ ॥ ३५ ॥

हवे चौद जीव स्थानक आश्रयीने ज्ञानावरणीय तथा अंतराय कर्मना भांगा कहे छे.

तेरससु जीव संखे-वएसु नाणंतराय तिविगप्पो । इक्कंमि ति दु विगप्पो, करणं पइ इछ अविगप्पो ॥ ३६ ॥

हवे दर्शनावरणीयना बंधोदय सत्ता स्थानकना भांगा चौद जीव स्थानकने विषे विचारे छे.

तेरे नव चउ पणगं, नव सत्त गम्मि भंग

अठ चउरछवीसे, नव सत्ति गुण तीस तीसम्मि ॥ ३३ ॥

एगेग मेगतीसे, एगे एगुदय अठ संतंमि । उवरय बंधो दस दस, वेयग संतंमि ठाणाणि ॥ ३४ ॥

तिविगप्प पगइ ठाणे-हिं जीव गुणसन्निएसु ठाणेसु । भंगा पउंजियव्वा, जत्थ जहा संभवो भवइ ॥ ३५ ॥

हवे चौद जीव स्थानक आश्रयीने ज्ञानावरणीय तथा अंतराय कर्मना भांगा कहे छे.

तेरससु जीव संखे-वएसु नाणंतराय तिविगप्पो । इक्कंमि ति दु विगप्पो, करणं पइ इत्थ अविगप्पो ॥ ३६ ॥

हवे दर्शनावरणीयना बंधोदय सत्ता स्थानकना भांगा चौद जीव स्थानकने विषे विचारे छे.

तेरे नव चउ पणगं, नव सत्त गम्मि भंग

हवे चौद गुणठाणाने विषे मोहनीय कर्मनां
बंध स्थानक वीवरीने कहे छे.

गुणठाणगेसु अठसु, इक्किक्कं मोह बंधठाणंतु।
पंचानिअट्टि ठाणा, बंधोवरमो परं तत्तो॥४८॥

हवे चौद गुणस्थानके मोहनीय कर्मनां
उदय स्थानक कहे छे.

सत्ताइ दसउ मिछे, सासायण मीसए नवु-
क्कोसो । छाई नवउ अविरई, देसे पंचाइ
अठेव ॥ ४९ ॥

विरए खउवसमिए, चउराई सत्त छच्च पुव्वंमि।
अनियट्टि बायरे पुण, इक्कोव दुवेव उदयंसा५०

एगं सुहुम सरागो, वेएइ अवेअगा भवे सेसा।
भंगाणं च पमाणं, पुव्वुद्दिठेण नायव्वं ॥ ५१ ॥

हवे गुणठाणा आश्रयी जांगानी संख्या कहे छे.

इक्क छ इक्किक्कारि, क्कारस इक्कार सेव नव
तिन्नि । एए चउवीस गया, बार दुगं पंच
इक्कंमि ॥ ५२ ॥

हवे चौद गुणठाणाने विषे मोहनीय कर्मनां बंध स्थानक धीवरीने कहे छे.

गुणठाणगेसु अठसु, इक्किक्कं मोह बंधठाणंतु।
पंचानिअट्टि ठाणा, बंधोवरमो परं तत्तो॥४८॥

हवे चौद गुणस्थानके मोहनीय कर्मनां उदय स्थानक कहे छे.

सत्ताइ दसउ मिछे, सासायण मीसए नवु-
क्कोसो । गई नवउ अविरई, देसे पंचाइ
अठेव ॥ ४९ ॥

विरए खउवसमिए, चउराई सत्त छच्च पुवंमि।
अनियट्टि बायरे पुण, इक्कोव दुवेव उदयंसा॥५०
एगं सुहुम सरागो, वेएइ अवेअगा भवे सेसा।
भंगाणं च पमाणं, पुवुद्दिठेण नायवं ॥ ५१ ॥

हवे गुणठाणा आश्रयी जांगानी संख्या कहे छे.

इक्कग छक्किक्कारि, क्कारस इक्कार सेव नव
तिन्नि । एए चउवीस गया, बार डुगं पंच
इक्कंमि ॥ ५२ ॥

हवे चौद गुणठाणाने विषे मोहनीय कर्मनां
बंध स्थानक वीवरीने कहे छे.

गुणठाणगेसु अठसु, इक्किक्कं मोह बंधठाणंतु।
पंचानिअट्टि ठाणा, बंधोवरमो परं तत्तो॥४८॥

हवे चौद गुणस्थानके मोहनीय कर्मनां
उदय स्थानक कहे छे.

सत्ताइ दसउ मिछे, सासायण मीसए नवु-
क्कोसो । छाई नवउ अविरई, देसे पंचाइ
अठेव ॥ ४९ ॥

विरए खउवसमिए, चउराई सत्त छच्च पुव्वंमि।
अनियट्टि बायरे पुण, इक्कोव दुवेव उदयंसा॥५०
एगं सुहुम सरागो, वेएइ अवेअगा भवे सेसा।
भंगाणं च पमाणं, पुव्वुद्दिठेण नायव्वं ॥ ५१ ॥

हवे गुणठाणा आश्रयी भांगानी संख्या कहे छे.

इक्कग छड्डिक्कियारि, क्कारस इक्कार सेव नव
तिन्नि । एए चउवीस गया, वार
दुगे ... ॥ ५२ ॥

तिहां चौद गुणठाणे उदय पदवृंद प्ररूपवाने
अंतर भाष्य गाथा कहे छे.

अठ्ठी बत्तीसं, बत्तीसं सठि मेव बावन्ना ।
चोआल दोसु वीसा, मिछमाईसु सामन्नं॥८६

हवे गुणठाणे मोहनीय कर्मनां सत्ता स्थानक कहे छे.

तिन्नेगे एगेगं, तिगमीसे पंच चउसु तिग
पुवे । इक्कार बायरंमिउ, सुहुमो चउ तिन्नि
उवसंते ॥ ८७ ॥

हवे चौद गुणठाणे नामकर्मना बंधोदय सत्ता
स्थानक अने भांगा कहे छे.

छन्नव छक्क तिग सत, डुगं डुगं तिग डुगं
तिअठ चउ । डुग छचउ डुग पण चउ, डुग
चउ चक्र पणग एग चउ ॥ ८८ ॥

एगेग मठ इगेग, मठव छउमत्थ केवल
जिणाणं । एगं चउ एगं चउ, अठ चउ डु
छक्कमुदयंसा ॥ ८९ ॥

तिहां चौद गुणठाणे उदय पदवृंद प्ररूपवाने
अंतर भाष्य गाथा कहे छे.

अठ्ठी बत्तीसं, बत्तीसं सठि मेव बावन्ना।
चोआल दोसु वीसा, मिछा माईसु सामन्नं॥५६

हवे गुणठाणे मोहनीय कर्मनां सत्ता स्थानक कहे छे.

तिन्नेगे एगेगं, तिगमीसे पंच चउसु तिग
पुवे। इक्कार बायरंमिउ, सुहुमो चउ तिन्नि
उवसंते॥ ५७॥

हवे चौद गुणठाणे नामकर्मना बंधोदय सत्ता
स्थानक अने भांगा कहे छे.

छन्नव छक्क तिग सत्त, डुगं डुगं तिग डुगं
तिअठ चउ। डुग छचउ डुग पण चउ, डुग
चउ चउ पणग एग चउ॥ ५८॥

एगेग मठ इगेग, मठउ छउमत्थ केवल
जिणाणं। एगं चउ एगं चउ, अठ चउ ड
छक्कमुदयंसा॥ ५९॥

हवे सास्वादने एकवीशादि सात उदय स्थानके भांगा प्ररूपवा जाष्य गाथा कहे छे.

वत्तीस डुन्नि अठय, वासीइ सयाय पंच नव उदया । वारहिआ तेवीसं, वावन्निक्कार ससयाय ॥ ६३ ॥

हवे नरकादिक चार गति मार्गणाने विषे अनुक्रमे बंधोदय सत्ता स्थानक कहे छे.

दो छक्क ठ चउक्कं, पण नव इक्कार छक्कगं उदया । नेरइ आइ सु सत्ता, ति पंच इक्कारस चउक्कं ॥ ६४ ॥

हवे इंडिय थाश्रयी नामकर्मनां बंधोदय सत्ता कहे छे.

इग विगलिंदिअ सगले, पण पंचय अठ बंध गणाणं । पण छक्किक्कारुदया, पण पण वारसय संताणि ॥ ६५ ॥

इय कम्म पगइठाणा-णि सुठु बंधुदय संत



मिच्छत्तं । संमत्त लोन्न वेञ्चा, उञ्चाणि नव नाम ह्वं च ॥ ३० ॥

मणुय गइ जाइ तस वा–यरं च पजत्त सुन्नग आइज्जं । जस कित्ती तिञ्चयरं, नामस्स हवंति नव एया ॥ ३१ ॥

हवे कया गुणठाणे कइ प्रकृति बांधे ठे एवो बंध विशेष सर्व गुणठाणे कहे ठे.

तिञ्चयरा हारग विर–हिआउ अयेइ सद्य पयडीउ । मिच्छत्तवेञ्चगो सा–साणो गुणवीस सेसाउ ॥ ३२ ॥

गयाल सेस मीसो, अविरय सम्मो तिआल परिसेसा । तेवन्न देस विरउ, विरउ सगवन्न सेसाउ ॥ ३३ ॥

इगुसठि मप्पमत्तो, बंधइ देवाउअस्स इअ-रोवि । अठावण मपुद्यो, उप्पन्नं वावि उवीसं ॥ ३४ ॥

कम्माणं । गइआएहिं अठसु, चउप्पयारेण नेआणि ॥ ६६ ॥

गइ इंदिए अ काए, जोए वेए कसाय नाणेअ। संयम दंसण लेसा, नव संमे सन्नि आहारे ॥ ६७ ॥

संतपय परूवणया, दव्व पमाणं च खित्त फुसणाय ।कालं तरं च जावो, अप्पा बहुयं च दाराइ ॥ ६८ ॥

अहींआं बंधोदय सत्तानो संवेध कह्यो तिहां उदय कह्यो पण उदीरणा न कही ते शामाटे न कही ? ते कहे छे.

उदयस्सुदीरणाए, सामित्ताउ न विजाइ विसेसो। मुत्तूणय इगयालं, सेसाणं सव्व पयडीणं॥६९॥

हवे एकतालीश प्रकृतिने उदय उदीरणाये फेर छे एटले उदय उदीरणानुं अंतर होय ते विशेषे बे गाथाए करी कहे छे.

नाणंतराय दसगं, दंसण नव वेयणिज्ज

वावीसा एगूणं, बंधइ अठारसंत अनिअट्टी । सत्तर सुहुम सरागो, साय ममोहो सजोगित्ती ॥ ७५ ॥

एसो उ वंधसामि,-त्त उहो गइआइएसुवि तहेव । उहाउ साहिजाइ, जत्थ जहा पयडि सप्नावो ॥ ७६ ॥

हवे जे गतिने विषे जेटली प्रकृति सत्ताए पामीये ते कहे छे.

तित्थयर देव निरिआ,-उअंच तिसु तिसु गईसु बोधवं । अवसेसा पयडीउ, हवंति सवासु विगईसु ॥ ७७ ॥

हवे उपशम श्रेणी कहे छे,

पढम कसाय चउक्कं, दंसण तिग सत्तगावि उवसंता । अविरय सम्मत्ताउ, जाव नियट्टित्ति नायवा ॥ ७८ ॥

सत्तठ नवय पनरस, सोलस अठार सेव

इगुवीसा । एगाहि दु चउवीसा, पणवीसा वायरे जाण ॥ ७ए ॥

हवे दशमे गुणठाणे जे प्रकृति उपशांत पामीये ते कहे छे.

सत्तावीसं सुहुमे, अठावीसं च मोह पयडीउ। उवसंत वीअरागे, उवसंता हुंति नायवा॥ ७०॥

हवे क्षपक श्रेणीनुं स्वरुप कहीए छीए.

पढम कसाय चउक्कं, इत्तोमिछत्त मीस सम्मत्तं । अविरय सम्मे देसे,पमत्ति अपमत्ति खीयंति ॥ ७१ ॥

हवे नवमे गुणठाणे शुं हणे ते कहे छे.

अनिअट्टि बायरेथी, ण गिद्धि तिग निरय तिरि अ नामाउ । संखिज्ज इमे सेसे, तप्पाउ-गाउ खीयंति ॥ ७७ ॥

इत्तो हणइ कसाय. छगंपि पच्छा नपुंसगं इत्थी। तो नोकसायछक्कं. बुहइ संजलण कोहम्मि॥७३॥

वावीसा एगूणं, वंधइ अठारसंत अनिअट्टी। सत्तर सुहुम सरागो, साय ममोहो सजोगित्ती ॥ ७५ ॥

एसो उ वंधसामि,—त्त उंहो गइआइएसुवि तहेव। उंहाउ साहिज्जाइ, जत्र जहा पयडि सब्भावो ॥ ७६ ॥

हवे जे गतिने विषे जेटली प्रकृति सत्ताए पामीये ते कहे ले.

तित्रयर देव निरिआ,—उअंच तिसु तिसु गईसु वोधवं। अवसेसा पयडीउ, हवंति सवासु विगईसु ॥ ७७ ॥

हवे उपशम श्रेणी कहे ले,

पढम कसाय चउक्कं, दंसण तिग सत्तगावि उवसंता। अविरय सम्मत्ताउ, जाव नियट्टित्ति नायवा ॥ ७८ ॥

सत्तठ नवय पनरस, सोलस अठार सेव

इगुवीसा । एगाहि ङ चउवीसा, पणवीसा वायरे जाण ॥ ७ए ॥

हवे दशमे गुणठाणे जे प्रकृति उपशांत पामीये ते कहे छे.

सत्तावीसं सुहुमे, अठावीसं च मोह पयडीउ। उवसंत वीअरागे, उवसंता हुंति नायवा॥ ८०॥

हवे क्षपक श्रेणीनुं स्वरुप कहीए ठीए.

पढम कसाय चउक्कं, इत्तोमिछत्त मीस सम्मत्तं । अविरय सम्मे देसे, पमत्ति अपमत्ति खीयंति ॥ ८१ ॥

हवे नवमे गुणठाणे शुं टळे ते कहे छे.

अनिअट्टि बायरेथी, ण गिद्धि तिग निरय तिरि अ नामाउ । संखिज्ज इमे सेसे, तप्पाउ-गाउ खीयंति ॥ ८२ ॥

णाइ कसाय. ठगंपि पञा नपुंसगं इत्ती। सायठक्कं. वुहइ संजलण कोहम्मि॥८३॥

पुरिसं कोहे कोहं, माणे माणं च बुहइ मायाए। मायंच बुहइ लोहे, लोहं सुहुमंपि तो हणइ ॥ ८४ ॥

खीण कसाय ङ चरिमे, निद्दं पयलं च हणइ ठउमहो । आवरण मंतराए, ठउमहो चरम समयम्मि ॥ ८५ ॥

हवे तिहां जे प्रकृति स्वजावे खपावे ते कहे छे.

देवगइ सहगयाउ, ङ चरिम समयं जविअंमि खीअंति । सविवागे अर नामा, नीआ गोअंपि तहेव ॥ ८६ ॥

अन्नयर वेअणिज्जं, मणुआउअ मुच्चगोअ नवनामे । वेएइ अजोगि जिणो, उक्कोस जहन्न मिक्कारे ॥ ८७ ॥

हवे नामकर्मनी नव प्रकृतिनां नाम कहे छे.

मणुअगइ जाइ तस बा-यरं च पजत्त सुजग आइज्जं । जस कित्ती तिच्छयरं, नामस्स हवंति नव एआ ॥ ८८ ॥

पुरिसं कोहे कोहं, माणे माणं च बुहइ मायाए।
मायंच बुहइ लोहे, लोहं सुहुमंपि तो हणइ
॥ ८४ ॥
खीण कसाय डु चरिमे, निहं पयलं च हिणइ
ठउमछो । आवरण मंतराए, ठउमछो चरम
समयम्मि ॥ ८५ ॥

हवे तिहां जे प्रकृति स्वभावे खपावे ते कहे ठे.
देवगइ सहगयाउं, डु चरिम समयं जविअंमि
खीअंति । सविवागे अर नामा, नीआ गो-
अंपि तठेव ॥ ८६ ॥
अन्नयर वेअणिज्जं, मणुआउअ मुच्चगोअ
नवनामे । वेएइ अजोगि जिणो, उक्कोस ज-
हन्न मिक्कारे ॥ ८७ ॥

हवे नामकर्मनी नव प्रकृतिनां नाम कहे ठे.
मणुअगइ जाइ तस बा–यरं च पज्जत्त सुजग
आइज्जं । जस कित्ती तित्थयरं, नामस्स हवंति
नव एआ ॥ ८८ ॥

पुरिसं कोहे कोहं, माणे माणं च बुहइ मायाए। मायंच बुहइ लोहे, लोहं सुहुमंपि तो हणइ ॥ ७४ ॥

खीण कसाय डु चरिमे, निद्दं पयलं च हिणइ उउमडो । आवरण मंतराए, उउमडो चरम समयम्मि ॥ ७५ ॥

हवे तिहां जे प्रकृति स्वजावे खपावे ते कहे डे.

देवगइसहगयाउ, डु चरिम समयं जविअंमि खीअंति । सविवागे अर नामा, नीआ गोअंपि तडेव ॥ ७६ ॥

अन्नयर वेअणिज्जं, मणुआउअ मुच्चगोअ नवनामे । वेएइ अजोगि जिणो, उक्कोस जहन्न मिक्कारे ॥ ७७ ॥

हवे नामकर्मनी नव प्रकृतिनां नाम कहे डे.

मणुअगइ जाइ तस वा–यरं च पज्जत्त सुजग आइज्जं । जस कित्ती तित्थयरं, नामस्स हवंति नव एआ ॥ ७७ ॥

हवे ग्रंथकर्त्ता आचार्य पोतानुं मान रहित पणुं
अने अनुरूत्तपणुं देखाडे छे.

जो जठ अपडिपुन्नो, अछो अप्पागमेण वंधोति। तं खमिऊण बहु सुआ, पूरे ऊणं परिकहंतु ॥ ९३ ॥

हवे गाथामान कहे छे.

गाहग्गं सयरीए, चंद महत्तर मयाणुसारीए। टीगाइ नियमि आणं, एगूणा होइ नउईउ ॥ ९४ ॥

॥ सप्ततिका नामा षष्टः कर्मग्रंथः समाप्तः ॥

श्रीरस्तु.



हवे ग्रंथकर्त्ता आचार्य पोतानुं मान रहित पणुं
अने अनुद्धत्तपणुं देखाडे छे.

जो जत्थ अपडिपुन्नो, अत्थो अप्पागमेण वंधोत्ति। तं खमिऊण बहु सुआ, पूरे ऊणं परिकहंतु ॥ एए३ ॥

हवे गाथामान कहे छे.

गाहग्गं सयरीए, चंद महत्तर मयाणुसारीए। टीगाइ नियमि आणं, एगूणा होइ नउईओ ॥ एए४ ॥

॥ सप्ततिका नामा षष्ठः कर्मग्रंथः समाप्तः ॥

श्रीरस्तु.

हवे ग्रंथकर्त्ता आचार्य पोतानुं मान रहित पणुं
अने अनुकूलपणुं देखाडे छे.

जो जङ अपडिपुन्नो, अन्नो अप्पागमेण वंधोति। तं खमिऊण वहु सुआ, पूरे ऊणं परिकहंतु ॥ ९३ ॥

हवे गाथामान कहे छे.

गाहग्गं सयरीए, चंद महत्तर मयाणुसारीए। टीगाइ नियमि आणं, एगूणा होइ नउईउ ॥ ९४ ॥

॥ सततिका नामा षष्ठः कर्मग्रंथः समाप्तः ॥

श्रीरस्तु.

